कुमाऊँ हिमालय के जनपद बागेश्वर में बढ़ते होम स्टे पर्यटन का स्थानीय आर्थिक विकास में योगदान

सुरेन्द्र सिंह*, डी. एस. परिहार**

सारांश

होम स्टे एक सूक्ष्म पर्यटन उद्यमिता है जो भारत में अपनाई गई एक अवधारणा है। यह पर्यटन जगत में हाल ही में विकसित एक उभरती हुई पर्यटन अवधारणा है। इसी प्रकार होम स्टे आवास का एक रूप या आवासीय सुविधा का एक रूप है, जहां पर्यटकों को एक मेजबान परिवार के साथ रहने का मौका दिया जाता है, जिसे उनके परिवार के साथ बातचीत करने और दैनिक जीवन शैली और उनकी स्थानीय संस्कृति का अनुभव करने के लिए चुना जाता है। शुरूआत में होम स्टे कार्यक्रम को एक अवकाश अवधारणा के रूप में जाना जाता था जो यूरोप में 1970 के दशक के अंत में शुरू हुआ था। उत्तराखण्ड में यह योजना 2018 में शुरू की गई। इसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में स्वरोजगार के अवसर बढ़ाने, अपर्याप्त आवासीय सुविधाओं की चुनौती का समाधान करने एवं सांस्कृतिक आदान–प्रदान के रुप में संचालित किया गया था। बागेश्वर उत्तराखण्ड का एक छोटा पर्वतीय जिला है जो अपनी भौगोलिक सुन्दरता, बहु–संस्कृति और पहाड़ी लोगों के आतिथ्य के कारण प्राकृतिक रूप से सुंदर हिमालयी जिला है इसलिए यह पर्यटन स्थल की खूबसूरत भूमि बन जाता है। पर्यटन विभाग की रिर्पोट बताती है कि 2013 में कुल पर्यटकों की संख्या 64531 थी जो 10 वर्ष बाद 2023 में 799586 तक पहुँच गई, जो 11.54% की वृद्धि है। सांख्यिकी स्पष्ट रूप से बागेश्वर में पर्यटकों की वृद्धि को दर्शाता है, जिसका सीधा प्रभाव जिले की अर्थव्यवस्था पर पड़ा है। पर्यटकों की यह वृद्धि दर आने वाले दिनों में और भी बढ़ने की संभावना है। कोरोना महामारी से पहले पर्यटन विभाग में 2020 तक पंजीकृत होम स्टे की संख्या 74 थी जो वर्तमान में बढ़कर 174 हो गई है, जो यह प्रदर्शित करता है कि पर्यटन डेस्टिनेशन के आस–पास पर्यटक आने लगे हैं जिससे होम स्टे की संख्या में इतनी वृद्धि देखी जा रही है। जिले में पर्यटन को बढ़ावा देने में विभिन्न ऐजेंसियों का प्रत्यक्ष योगदान है। होम स्टे पर्यटन कार्यक्रम उन पर्यटन गतिविधियों में से एक है जो सामुदायिक भागीदारी पर आधारित है जिसमें ग्रामीण विस्तार और विकास करने की क्षमता है। बागेश्वर जनपद के लीती ग्राम में 7 महिलाऐं आपसी तालमेल से अपने होम स्टे का संचालन करती हैं जो सामुदायिक भागीदारी का प्रत्यक्ष प्रमाण है। कोरोना काल में होम स्टे बन्द होने के चलते इन मेहनती लोगों को काफी आर्थिक चपत पड़ी थी लेकिन अब हालात सामान्य होने कारण इनका व्यवसाय वर्तमान में तरक्की की राह पर है।

शब्द संकेत : कुमाऊँ हिमालय, आर्थिक, सामाजिक, होमस्टे, आर्थिक विकास।

प्रस्तावना

''कुमाऊँ हिमालय'' अंचल अपनी नैसर्गिक सुन्दरता के लिए विख्यात है। इस अंचल में जहाँ आकाश को छूने वाली हिमालय की उच्च चोटियाँ है, वही छोटी–छोटी और हरी–भरी अनेक पर्वत श्रृंखलाएं भी हैं, जो प्रत्येक प्रकृति प्रेमी को अपनी ओर आकर्षित करने में सफल रहती हैं। यही कारण है कि इस अंचल में प्रतिवर्ष हजारों पर्यटक, सैलानी, पर्वतारोही और प्रकृति प्रेमी देश–विदेश से आते रहते हैं। कुमाऊँ हिमालय उ.प्र. के उत्तरी भाग में स्थित है। इसके उत्तर में तिब्बत का प्रदेश है। दक्षिण में पीलीभीत, बरेली, रामपुर और मुरादाबाद जिले हैं। पूर्व में ''कुमाऊँ'' की सीमा काली नदी है जो नेपाल को अलग करती हुई अपनी सीमा बनाती है। पश्चिम में बीजनौर तथा गढ़वाल मण्डल के चमोली और पौड़ी गढ़वाल जिले स्थित हैं। बागेश्वर कुमाऊँ हिमालय में बसा महत्वपूर्ण पर्वतीय जिला है जो पर्यटन की दृष्टि से खासा महत्व रखता है।

होम स्टे एक सूक्ष्म पर्यटन उद्यमिता है जो भारत में अपनाई गई एक अवधारणा है। यह पर्यटन जगत में हाल ही में विकसित एक उभरती हुई पर्यटन अवधारणा है। इसी प्रकार होम स्टे आवास का एक रूप या आवासीय सुविधा का एक रूप है, जहाँ पर्यटकों को एक मेजबान परिवार के साथ रहने का मौका दिया जाता है, जिसे उनके परिवार के साथ बातचीत करने और दैनिक जीवन शैली और उनकी स्थानीय संस्कृति का अनुभव करने के लिए चुना जाता है। शुरूआत में होम स्टे कार्यक्रम को एक अवकाश अवधारणा के रूप में जाना जाता था जो यूरोप में 1970 के दशक के अंत में शुरू हुआ था। वर्ष 2020 के कोरोना संकट की सुविधा के साथ ही देश दुनिया में पर्यटन उद्योग को काफी नुकसान उठाना पड़ा। पर्यटक स्थल के आस–पास रहने वाले लोगों के लिए काम–काज का जरिया उपलब्ध कराने और पर्यटकों को कम कीमत में बेहतर सुविधा

* भूगोल विभाग, कुमाऊँ केशरी पंडित बद्रीदत्त पाण्डे परिसर, बागेश्वर
** भूगोल विभाग, डी. एस. बी. परिसर, नैनीताल, उत्तराखण्ड

उपलब्ध कराने के लिए उत्तराखण्ड सरकार ने होम स्टे योजना का संचालन किया है। इसके माध्यम से स्थानीय लोगों के लिए स्वरोजगार के अवसरों का भी सजृन होगा और निश्चित तौर पर स्थानीय लोगों की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

जिले में पर्यटन को बढ़ावा देने में विभिन्न ऐजेंसियों का प्रत्यक्ष योगदान पाया गया है। इसके अंतर्गत दीन दयाल उपाध्याय होम स्टे योजना, वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली योजना तथा अतिथि उत्तराखण्ड गृह आवास योजनायें शामिल हैं। इन योजनाओं का मुख्य उद्देश्य अलग–अलग शहरों से आने वाले पर्यटकों को स्थानीय लोगों द्वारा अपने घर में रहने की सुविधा देना है। सरकार की इस पहल से स्थानीय लोगों को रोजगार मिल रहा है और पर्यटकों को कम कीमत पर बेहतर आवास सुविधा मिल पा रही है। होम स्टे पर्यटन कार्यक्रम उन पर्यटन गतिविधियों में से एक है जो सामुदायिक भागीदारी पर आधारित है जिसमें ग्रामीण विस्तार और विकास करने की क्षमता है।

होम स्टे–पर्यटन आतिथ्य प्रक्रिया में एक उभरती हुई अवधारणा है जिसे होटल आवास व्यवस्था का अच्छा विकल्प माना जा रहा है। इसके अंतर्गत आगन्तुकों को होटल आवास के विपरित सुदूर पर्यटन डेस्टीनेशन के आस–पास वहां के लोगों, उनकी संस्कृति–विरासत एवं स्थानीय खान–पान, भाषा–बोली से उसे परिचित करवाया जाता है जिससे उनको सुखद अनुभव की प्राप्ति हो। विभिन्न प्रकार के आवास जैसे हेरिटेज होम, फार्म हाउस, एस्टेट बंगले, पैतृक घर आदि को इसके अंतर्गत सम्मिलित किया जाता है जो शहरी जीवन से दूर तथा पर्यटक आकर्षण केन्द्र के आस–पास एक सुखद अनुभव प्रदान करता है। 1990 के दशक में समुदाय आधारित पर्यटन पहल (सीबीटीआई) की उत्पत्ति और वृद्धि वन्यजीव संरक्षण के लिए सामुदायिक समर्थन बढ़ाने की उनकी धारणा पर आधारित थी, जबकि यह सुनिश्चित करना था कि स्थानीय समुदाय पर्यटन विकास में भाग ले सकें और लाभ उठा सकें[1]। [2]अध्ययन में ग्राम पर्यटन की आवश्यकता पर उन्होंने प्रस्तुत किया कि ''पृथ्वी हर किसी की जरूरत के लिए है लेकिन हर किसी के लालच के लिए नहीं''। उल्लेखनीय रूप से ग्रामीण पर्यटन विकास के कई ऐतिहासिक, भौतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विशिष्ट कारक होते हैं यदि ग्रामीण क्षेत्रों को सावधानीपूर्वक ग्रामीण पर्यटन के रूप में नियोजित किया जाए तो वे राजस्व ग्राम हो सकते हैं। आज के समय में योजनाकारों एवं डेवलपर्स को ग्रामीण पर्यटन के क्षेत्र पर ध्यान देने की आवश्यकता है। [3]होम स्टे को एक प्रकार के आवास के रूप में परिभाषित किया गया है, पर्यटक जिसे घर के मालिक के साथ संस्कृति और जीवन शैली सीखने के इरादे से साझा करते हैं जो अपनी संस्कृति को प्रसारित करने और साझा करने के इच्छुक हैं। गृहस्वामी वह होता है जो उचित वेतन पर पर्यटकों के लिए आवास और भोजन तैयार करता है। [4]होम स्टे को वाणिज्यिक घरों के रूप में सन्दर्भित करके व्यापक परिभाषा दी है– इसके तहत आगंतुक या मेहमान निजी आवास में रहने के लिए भुगतान करते हैं, जहां मेजबान या परिवार के साथ विचारो का आदान–प्रदान होता है। यह एक बहुत ही अनूठी विशेषता है क्योंकि यह अवधारणा मेजबान परिवारों और पर्यटकों के बीच आलाप को बढ़ावा देती है और सांस्कृतिक आदान–प्रदान और मेजबान की संस्कृति के प्रति और अधिक जानने के साधन के रूप में कार्य करता है। [5]अध्ययन में कहा है कि होम स्टे पर्यटन, पर्यटन जगत में हाल ही में विकसित एक उभरती हुई पर्यटन अवधारणा है। भारत अपनी बहुमुखी संभावनाओं के लिए एक मॉडल होमस्टे हो सकता है। प्राकृतिक उपहार, मानव निर्मित विरासत, जातीय–सांस्कृतिक समृद्धि, सुखद आतिथ्य और कई अन्य अज्ञात खजाने जो पर्यटन के विशेषज्ञों के लिए सपने हैं।

[6]सुझाव दिया है, कि आदर्श रूप से होमस्टे योजना की स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए सहभागियों और प्राधिकारियों से आत्मविश्वास, समर्थन और प्रेरणा मिलनी चाहिए क्योंकि होमस्टे स्थानीय रूप से स्वामित्व और संचालित होते हैं इसलिए वे उद्यमियों के रूप में पर्यटन गतिविधियों में भाग लेने के लिए स्थानीय समुदाय के लिए एक उपर्युक्त पर्यटक आवास का संचालन करते हैं। [7]अध्ययन के दौरान पाया कि होमस्टे स्थानीय समुदाय के लिए आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक लाभ के साथ–साथ सतत् विकास सुनिश्चित कर सकता है, इसलिए उन्होंने इस शोध के माध्यम से ग्रामीण समुदाय के सामाजिक आर्थिक कल्याण में होम स्टे आवास के योगदान पर अपने निष्कर्षों के माध्यम से एक मंच प्रदान किया। [8]पूर्वी तट आर्थिक क्षेत्र (ई.सी.ई.आर.) में पर्यावरण–पर्यटन विकास के लिए होम स्टे की संभावनाओं के बारे में अध्ययन किया। इस अध्ययन के विश्लेषण के लिए द्वितीयक आंकड़ों का उपयोग किया। उन्होंने पाया कि होमस्टे संचालन वैकल्पिक आवास के अवसर पैदा कर रहा है। [9]उन्होंने पाया कि होमस्टे की अवधारणा पर्यटन में सामुदायिक भागीदारी का एक रूप है जो तेजी से बढ़ रही है, इसके सफल होने के लिए इसके संचालकों को शिक्षित होना जरूरी बताया है क्योंकि शैक्षिक योग्यता एवं कौशल पर्यटकों की संख्या पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है। [10]मांग आधारित तंत्र के आधार पर संपन्न और जरूरत मंदों की आवश्यकताओं के संमिलन के बिना समृद्ध नहीं हो सकता क्योंकि यह एक आवश्यकता आधारित अवधारणा है जिसमें होम स्टे विनियमन से इसे किसी व्यक्ति या समुदाय द्वारा संचालित अथवा प्रबंधित माना है।

उद्देश्य एवं विधितंत्र

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य जनपद में पर्यटन की वर्तमान स्थिति, पर्यटन आवासीय गृहों का अध्ययन, होमस्टे की भौगोलिक स्थिति, विस्तार, प्रकार, बढ़ते होमस्टे की संख्या वर्ष 2017 से 2022 तक, होम स्टे में देशी एवं विदेशी पर्यटकों के आगमन का विवरण, होम स्टे से प्राप्त होने वाली आय, होम स्टे कार्यक्रम में प्रेरक कारक, क्षेत्र के सामाजिक–आर्थिक विकास में होमस्टे का योगदान एवं स्थानीय पर्यटन व अर्थव्यवस्था में परिवर्तन होम स्टे कार्यक्रम का योगदान का विस्तार पूर्वक अध्ययन करना है।

प्रस्तुत अध्ययन कार्य को पूर्ण करने हेतु सर्वेक्षणात्मक एवं विश्लेषणात्मक दोनों विधियों का प्रयोग किया गया है जिसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक आंकड़ों का संग्रह फिल्ड सर्वेक्षण के दौरान असंरचित साक्षात्कार के माध्यम से एवं मोबाइल फोन इन्टरव्यू के द्वारा प्राप्त किया गया है। प्राथमिक आंकड़ों के संग्रह के दौरान सैम्पल आकार के निर्धारण के लिए अनुदैर्ध्य रिसर्च प्रविधि का प्रयोग किया गया है। गरूड़, बागेश्वर तथा कपकोट तहसीलों की प्रभावी स्थिति जानने के लिए पर्यटन विभाग से प्राप्त रजिस्टर्ड होम स्टे संचालकों एवं होम स्टे के प्रकार को आधार माना है तथा प्रत्येक होम स्टे के 4–10 होम स्टे धारकों से संरचित साक्षात्कार द्वारा डेटा संग्रहित किया गया है। इस दौरान 9 विभिन्न पैरामीटर पर संरचित साक्षात्कार किया गया है। द्वितीयक आंकड़ों को प्राप्त करने के लिए जनपद बागेश्वर पर्यटन विभाग से प्राप्त डेटा, विकास खण्ड कार्यालय की वार्षिक रिर्पोटर्स, विभिन्न पुस्तकें, शोध पत्र, पत्रिकायें व सामाचार पत्रों की सहायता ली गई है। भौगोलिक सूचना प्राप्त करने हेतु, मानचित्र निर्माण, छायाचित्र संपादन एवं ऑकड़े तैयार करने के लिए Google Earth, Arc GIS, MS Paint, Office and Excel सॉफ्टवेयर का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन क्षेत्र उत्तराखण्ड के कुमाऊँ मण्डल में स्थित बागेश्वर जनपद है। इस जिले के उत्तर तथा पूर्व में पिथौरागढ़ जिला, पश्चिम में चमोली जिला, तथा दक्षिण में अल्मोड़ा जिला है। अध्ययन क्षेत्र का भौगोलिक विस्तार 29°59′41′′ उत्तर से 30°18′17′′ उत्तरी तक अक्षांशीय विस्तार तथा 79°5′43′′ पूर्व से 80°04′38′′ पूर्वी तक इसका देशांतरीय विस्तार है। इसका क्षेत्रफल 2246 वर्ग किलोमीटर है, जो समुद्र तल से इसकी औसत ऊॅचाई 935 मीटर है तथा यहाँ की जनसंख्या 2011 के अनुसार 2,59,898 है[11]। उत्तराखण्ड के जिलों में रूद्रप्रयाग तथा चम्पावत के बाद यह उत्तराखण्ड का तीसरा सबसे कम जनसंख्या वाला जिला है। इस क्षेत्र का औसत वार्षिक तापमान 20.4° सेल्सियस तक रहता है तथा औसत वार्षिक वर्षण 1376 मिमि0 (स्रोत– हिमालयी जड़ी–बूटी अनुसंधान संस्थान) है। यह जिला धार्मिक गाथाओं, पर्व आयोजनों और अत्याकर्षण प्राकृतिक दृश्यों के कारण प्रसिद्ध है।

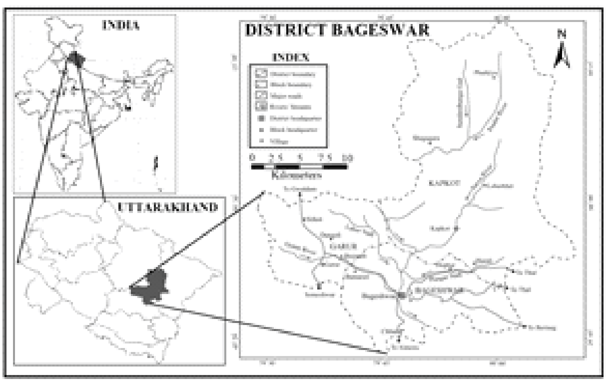

मानचित्र–1: जनपद बागेश्वर की अवस्थिति व विस्तार।

प्राचीन प्रमाणों के आधार पर बागेश्वर शब्द को ब्याघ्रेश्वर से विकसित माना गया है। यह शब्द प्राचीन भारतीय साहित्य में अधिक प्रसिद्ध है। बागनाथ मन्दिर, कौसानी, बैजनाथ तथा विजयपुर आदि जिले के प्रमुख पर्यटन स्थल हैं। जिले मे ही स्थित पिण्डारी, काफनी, सुन्दरढूंगा हिमनद साहसिक पर्यटन के केन्द्र बिन्दु हैं। जहाँ से पिण्डर तथा सरयू नदियों का उद्गम होता है। उत्तराखण्ड के अन्य आकर्षणों की भाँति यहाँ भी कई प्रकार के पर्यटन संसाधन विद्यमान हैं। जिनमें से

ग्रामीण पर्यटन, ईको टूरिज्म, प्राकृतिक पर्यटन, साहसिक पर्यटन की संभावनायें क्षेत्र में बनी हुई हैं और वर्तमान में सांस्कृतिक पर्यटन, साहसिक ट्रैकिंग, एवं प्राकृतिक पर्यटन के लिए पर्यटकों की आवाजाही बनी हुई है।

जनपद में पर्यटन की वर्तमान स्थिति

बागेश्वर अंचल अपनी नैसर्गिक सुन्दरता के लिये विख्यात है। इस अंचल में जहाँ आकाश को छूने वाली हिमालय की उच्च चोटियाँ हैं, वहाँ छोटी–छोटी और हरी–भरी अनेक पर्वत श्रृंखलायें भी हैं–जो प्रत्येक प्रकृति–प्रेमी को अपनी ओर आकर्षित करने में सफल रहती हैं। यही कारण है कि इस अंचल में प्रति वर्ष हजारों पर्यटक, सैलानी, पर्वतारोही और प्रकृति–प्रेमी देश–विदेश से आते रहते हैं। कुमाऊँ की धरती बागेश्वर रसीली है यहाँ हरे–भरे बाँज–बुराँश के वनों में नाना प्रकार के पशु–पक्षी स्वच्छन्द विचरण करते रहते हैं, नदियों का कल–कल स्वर जहाँ सैलानियों को कर्णप्रिय लगता है, वहीं पक्षियों का कलरव उन्हें मादकता प्रदान करता है तथा नाना प्रकार के फूल यहाँ खिलते हैं व दूर–दूर तक घाटियों में पकी फसलों का सौन्दर्य अद्‌भुद दृश्य प्रस्तुत करता है।

पर्यटन विभाग जिला कार्यालय बागेश्वर के आँकड़ों के अनुसार वर्ष 2013 से 2023 तक क्रमशः देशी व विदेशी पर्यटकों की कुल संख्या तालिका–1 में प्रस्तुत है। जनपद बागेश्वर में 11 सालों में कुल 804854 पर्यटकों का आगमन हुआ, जिसमें देशी पर्यटक 799586 एवं विदेशी पर्यटक 5268 शामिल हैं। इन 11 सालों में पर्यटकों के आगमन औसत प्रतिवर्ष 73168.54 पर्यटक है, जिसमें देशी पर्यटकों का औसत 72689.64 तथा विदेशी पर्यटकों का औसत 478.91 हैं। 2013 में कुल पर्यटकों की आगमन संख्या 64531 थी जो बढ़कर 11वें वर्ष 2023 में 799586 तक पहुँच गई, जिसमें 11.54% की वृद्धि देखी जा सकती है। आंकड़ों के अध्ययन से यह भी पता चलता है कि जनपद बागेश्वर में देशी पर्यटकों के आगमन की प्रवृत्ति अधिक है। विदेशी पर्यटकों के कम रूझान का कारण पर्यटन में वैश्वीकरण के प्रयास में कमी देखी गई है। जनपद में वर्ष 2020–21 में विश्वव्यापी कोरोना महामारी संक्रमण के चलते पर्यटन ही नहीं बल्कि अर्थव्यवस्था का कोई ऐसा खण्ड नहीं जो इससे प्रभावित न हुआ हो इसके चलते इस वर्ष पर्यटकों का आवागमन कम हुआ है। इसलिये वर्ष 2021 में जनपद बागेश्वर में पर्यटन काफी प्रभावित हुआ, इसका अनुमान हम उपरोक्त सांख्यिकी आंकड़ो से लगा सकते हैं।

तालिका–1ः जनपद में पर्यटकों का आगमन 2013 से 2023 तक (स्रोतः पर्यटन विभाग बागेश्वर)

क्र. स.	वर्ष	देशी पर्यटक	विदेशी पर्यटक	क्र.स.	वर्ष	देशी पर्यटक	विदेशी पर्यटक
1	2013	63740	791	7	2019	104841	519
2	2014	75398	824	8	2020	11871	10
3	2015	76267	673	9	2021	45807	08
4	2016	76807	353	10	2022	81952	154
5	2017	78026	376	11	2023	97660	536
6	2018	87217	1024	**योग**		**799586**	**5268**

जनपद में पर्यटक आवासीय गृह

जनपद में पर्यटकों हेतु रात्री विश्राम के आवासीय सुविधा में होटल, गेस्ट हाउस तथा रेस्ट हाउस सुविधायें प्रदान करते हैं। ऐसे होटल, गेस्ट हाउस एवं रेस्ट हाउस में कुल शयन कक्षों की संख्या 762 तथा इनमें बिस्तरों की संख्या 1800 है। इनके अतिरिक्त सरकारी विश्राम गृहों तथा डॉक बंगलों की संख्या 22 है, जिनमें से वन विभाग बागेश्वर के 4, कुमाऊँ मण्डल विकास निगम के 7 तथा लोक निर्माण विभाग के 11 विश्राम गृह तथा डॉक बंगले शामिल हैं, जिसे तालिका–2 में प्रदर्शित किया गया है।

जनपद के सुदूर पर्वतीय क्षेत्रों के पर्यटन गंतव्य के ग्रामीण अंचलों में वर्तमान में उत्तराखण्ड सरकार द्वारा चलाई गई भविष्योन्नमुखी होम स्टे योजना के तहत 174 होम स्टे पर्यटक आवास गृहों का संचालन किया जा रहा है। जिनमें पर्यटक

मेहमान बनकर रह रहा है, और होम स्टे संचालक तथा ग्रामीण समुदाय एक दूसरे से संस्कृति का आदान–प्रदान कर रहा है। साथ ही इसके द्वारा ग्रामीण लोग होम स्टे के रूप में मुद्रा अर्जन भी कर रहे हैं।

तालिका–2: जनपद बागेश्वर में होटल, विश्राम गृह एवं डॉक बंग्लों का विवरण (स्रोतः जिला आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण एवं पर्यटन विभाग बागेश्वर)।

क्र. स.	विभाग का नाम	विश्राम गृह / डॉक बंगला	आवास गृह की संख्या	कक्षों की संख्या	बैड की संख्या
1.	लोक निर्माण विभाग	बागेश्वर	1	8	16
2.	कुमाऊँ मण्डल विकास निगम	कपकोट, लोहारखेत, धाकुड़ी, खाती, फुरकिया, द्वाली, जातोली, कठलिया	7	68	170
3.	वन विभाग	कौसानी, वज्यूला, धरमघर, रैखेली	4	32	68
4.	निजी होटल, गेस्ट तथा रेस्ट हाउस	सम्पूर्ण जनपद (अच्छी स्थिति के आवास गृह)	78	792	1800
योग			**90**	**900**	**2054**

होम स्टे की स्थिति

फिल्ड सर्वे, पर्यटन विभाग बागेश्वर तथा उत्तराखण्ड पर्यटन विकास, मास्टर प्लान की रिर्पोट (2007–22) से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार बागेश्वर जनपद के तीन तहसीलों का अध्ययन एवं विश्लेषण करने पर पाया गया कि वर्ष 2017 से 2023 के बीच कुल होम स्टे की संख्या 174 है। जिसमें से कपकोट में सर्वाधिक तथा बागेश्वर तहसील में सबसे कम होम स्टे की संख्या पाई गई है, जिसे मानचित्र–2 में तथा होम स्टे की कुल संख्या का विवरण तालिका–3 में दर्शाया गया है। जनपद में होम स्टे के प्रकारों पर दृष्टिपात करें तो यहाँ पर गोल्ड, ब्रोन्ज तथा सिल्वर वर्ग के होम स्टे का संचालन किया जा रहा है। तहसीलवार देखें तो गरूड़ में 6 गोल्ड, 18 ब्रोन्ज तथा 10 सिल्वर वर्ग के होम स्टे आवास का संचालन वर्तमान में किया जा रहा है, जिसे तालिका–4 में दर्शाया गया है।

तालिका–3: बागेश्वर जनपद में होम स्टे की संख्या में बढ़ोतरी वर्ष 2017 से 2022 तक (स्रोतः फिल्ड सर्वेक्षण–2023 एवं उत्तराखण्ड पर्यटन विकास, मास्टर प्लान, 2007–22, उत्तराखण्ड सरकार)

ब्लॉक	वर्ष						कुल
	2017	2018	2019	2020	2021	2022	
गरूड़	3	4	9	5	9	11	41
बागेश्वर	2	1	5	3	8	5	24
कपकोट	9	9	15	9	32	35	109
योग	**14**	**14**	**29**	**17**	**49**	**51**	**174**

तलिका–4: जनपद बागेश्वर में होम स्टे का प्रकार तथा संख्या का वितरण वर्ष 2023 (स्रोतः पर्यटन विभाग बागेश्वर)

ब्लॉक	होम स्टे का प्रकार			
	गोल्ड	ब्रोन्ज	सिल्वर	कुल
गरूड़	6	18	10	34
बागेश्वर	8	26	2	36
कपकोट	4	90	10	104
योग	**17**	**134**	**22**	**174**

मानचित्र–2: जनपद बागेश्वर में होम स्टे का भौगोलिक वितरण वर्ष 2023 में
(स्रोतः फिल्ड सर्वेक्षण–2023, जी0पी0एस0 एवं पर्यटन विभाग बागेश्वर)

होम स्टे में देशी एवं विदेशी पर्यटकों का आगमन

जनपद के होम स्टे में रहने वाले देशी एवं विदेशी पर्यटकों की कुल संख्या वर्ष 2017 से 2023 तक तालिका–5 में प्रदर्शित है। 2017 में जहां स्वदेशी पर्यटकों की संख्या 1573 तथा विदेशी पर्यटकों की संख्या 124 थी। अब वर्तमान 2023 में जहां स्वदेशी पर्यटकों की संख्या 7660 तथा विदेशी पर्यटक की संख्या 236 है। इस वर्ष स्वदेशी एवं विदेशी पर्यटकों दोनों की संख्या में वृद्धि देखने को मिली है।

इससे यह प्रतीत होता है कि होम स्टे योजना के अंतर्गत पर्यटकों को स्थानीय लोगों का व्यवहार, खान–पान, तथा स्थानीय उत्पाद को पसन्द किया जाने लगा है। सर्वे के दौरान भी पाया गया है कि लोगों को पर्वतीय लोगों का व्यवहार, खान–पान तथा स्थानिक वस्तुओं को काफी पसन्द किया जाने लगा है और जाते समय भौगोलिक संकेत के रूप में स्थानिक वस्तुओं को भी याद के तौर पर ले जा रहे हैं। यही कारण है कि लोग होम स्टे आवास में रहना पसन्द कर रहे हैं। वर्ष 2017 में जहां कुल होम स्टे में रूकने वाले पर्यटकों की संख्या 1687 थी वहीं 2023 में यह संख्या बढ़कर 35910 हो गई जिसकी वृद्धि दर (2017–23 तक) 20.28% है, यह वृद्धि दर उत्साह जनक है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि जनपद में होम स्टे आवास को पर्यटकों द्वारा पसन्द किया जाने लगा है और आने वाले समय में जनपद में पर्यटकों के आने की बड़ी संभावना है। होम स्टे में रहने वाले ज्यादातर पर्यटक भारतीय समुदाय के हैं। भारतीय राज्यों से जनपद में आने वाला सबसे बड़ा वर्ग बंगालियों का है। जिन्हें सस्ते दाम पर अच्छी सुविधा मिल रही है। इस कारण ये लोग प्रतिवर्ष बागेश्वर के पर्यटन को देखने आते हैं। जहां एक ओर भारतीय पर्यटकों की जनपद में आने की प्रवृत्ति में उछाल देखा गया है वहीं जनपद के पर्यटन में विदेशियों का रूझान बहुत कम है। इसका प्रमुख कारण वैश्वीकरण के प्रयासों में कमी को पाया है।

तालिका–5: होम स्टे में देशी एवं विदेशी पर्यटकों के आगमन की संख्या वर्ष 2017 से 2022
(स्रोतः फिल्ड सर्वेक्षण–2023 एवं उत्तराखण्ड पर्यटन विकास मास्टर प्लान, उत्तराखण्ड सरकार)

क्र. स.	वर्ष	देशी पर्यटक	विदेशी पर्यटक	क्र.स.	वर्ष	देशी पर्यटक	विदेशी पर्यटक
1	2017	1573	124	5	2021	5807	08
2	2018	2987	208	6	2022	8952	154
3	2019	6070	122	7	2023	7660	236
4	2020	1861	10	योग		**35910**	**862**

होम स्टे से प्राप्त होने वाली आय

पहले के वर्षों में होम स्टे से आय भले ही कम नजर आती है लेकिन बाद के वर्षों में काफी सुधार हुआ है। 2017 में जहां तीनों ही तहसील की आय गरुड़ बागेश्वर तथा कपकोट की आय तालिका–6 में दर्शाया गया है। वर्ष 2013 में तीनों ही तहसीलों की कुल आय 67030 रू. है। 2023 के वर्ष में बढ़कर 334300 रू. हो गई जो शुरूआती वर्ष 2017 के मुकाबले 3.98% की वृद्धि को दिखाती है। स्पष्ट है कि जिले में होम स्टे से होने वाली आय में कुछ वृद्धि जरूर नज़र आती है। इसके अलावा जनपद के तीनों ही तहसीलों में आने वाली पर्यटकों की प्रवृति का देखें तो सबसे ज्यादा सैलानी कपकोट उसके बाद गरूड़ तथा तीसरे स्थान पर बागेश्वर तहसील है।

इस दौरान यह भी पाया गया कि सबसे ज्यादा होम स्टे से आय प्राप्त करने वाली तहसील कपकोट रही है उसके बाद गरूड़ तथा बागेश्वर तहसीलें रहीं है। इसका कारण क्षेत्र में अतिथियों को दी जाने वाली सुविधा का स्तर है (छायाचित्र–1)। जिसमें होम स्टे की स्थिति, कमरों की साफ–सफाई, खान–पान तथा लोगों का व्यवहार जो प्रत्येक पर्यटक को इस क्षेत्र में आने का प्रेरित करता है और पुनः आने की इच्छा जाहिर करता हुआ चला जाता है।

तालिका–6ः होमस्टे से प्राप्त आय (रू) का विवरण वर्ष 2017–2023

(स्रोतः फिल्ड सर्वेक्षण–2023 एवं उत्तराखण्ड पर्यटन विकास, मास्टर प्लान की रिर्पोट, उत्तराखण्ड सरकार)

तहसील का नाम	वर्ष							योग
	2017	2018	2019	2020	2021	2022	2023	
गरूड़	24580	31420	29189	9890	37900	125850	135800	**394629**
बागेश्वर	10500	12520	14400	8400	7500	14800	17900	**86020**
कपकोट	31950	34790	47800	5470	29200	285850	180600	**615660**
योग	**67030**	**78730**	**91389**	**16200**	**74600**	**426100**	**334300**	**1096309**

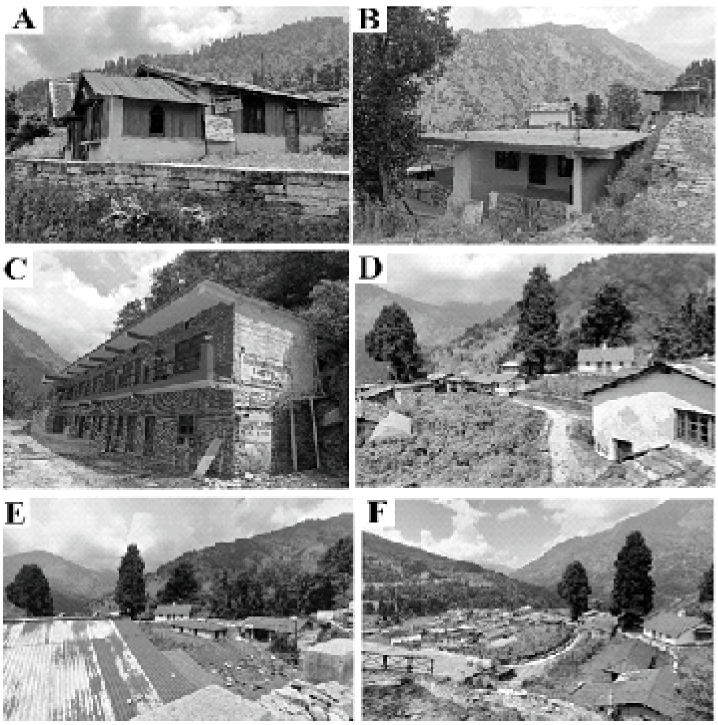

छायाचित्र–1ः सीमांत हिमालयी क्षेत्र के खाती गांव में होम स्टे (फोटो स्रोत– सुरेन्द्र सिंह, फिल्ड सर्वेक्षण–2023)

होम स्टे पर्यटन योजना उन पर्यटन गतिविधियों में से एक है जो सामुदायिक भागीदारी पर आधारित है जिसमें ग्रामीण विस्तार और विकास करने की क्षमता है। बागेश्वर जनपद के लीती ग्राम में 7 महिलाऐं आपसी तालमेल से अपने होम स्टे का संचालन करती हैं जो सामुदायिक भागीदारी का प्रत्यक्ष प्रमाण है। कोरोना काल में होम स्टे बन्द होने के चलते इन मेहनती लोगों को काफी आर्थिक चपत पड़ी थी लेकिन अब हालात सामान्य होने कारण इनका व्यवसाय वर्तमान में तरक्की की राह पर है।

होम स्टे योजना में प्रेरक कारक

होम स्टे एक सूक्ष्म पर्यटन उद्यमिता है। यह एक नई अवधारणा है और कई उद्यमी इस व्यवसाय को शुरू करने में गहरी रूचि दिखा रहे हैं। होम स्टे योजना का विकास सीधे तौर पर इकोटूरिज्म के सिद्धांतों से जुड़ा हुआ है। होम स्टे स्थानीय अर्थव्यवस्था को पुर्नजीवित करने, समुदाय को सशक्त बनाने और प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने का काम करता है। जनपद में होम स्टे ने स्थानीय अर्थव्यवस्था में योगदान के अलावा स्थाई पर्यटन विकास, प्राकृतिक पर्यावरण और संस्कृति के संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। होम स्टे में पर्यटकों का आवागमन और होम स्टे गतिविधियों से कुमाऊँ हिमालयी क्षेत्र बागेश्वर में आय महत्वपूर्ण रही है। 2017–2023 की अवधि में इसमें सफल वृद्धि की प्रवृति देखने को मिली है और होम स्टे द्वारा रोजगार के सृजन में पहले की तुलना में सकारात्मक परिणाम देखने को मिला है। तालिका–6 में तीनों तहसीलों के आय में विचलन को दिखाया गया है। इस बीच यह भी देखा गया कि अधिकांश होम स्टे ने अपने व्यवसाय को बढ़ाने और पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए अपनी मार्केटिंग रणनीतियां विकसित नहीं की हैं और कई होम स्टे अपने मेहमानों को मानक पर्यटन ढ़ांचागत सुविधायें और सेवायें प्रदान करने में उतने सफल नहीं पाये गये। फिर भी जनपद के होम स्टे पर्यटन में उपलब्ध पर्यटन संसाधन से क्षेत्र विशेष की अर्थव्यवस्था में अच्छा परिणाम देखने को मिला है।

कोरोना काल में उत्तराखण्ड सरकार के द्वारा होमस्टे संचालन कार्य प्रारम्भ किया गया। इसका फायदा उन लोगों को मिला जो लोग रोजगार के अभाव में इधर–उधर भटक रहे थे और वे लोग भी जो पर्यटन उद्योग से पहले से ही जुड़े हुये थे। फील्ड सर्वेक्षण के दौरान पाया गया है कि जनपद के तीनों तहसीलों में होम स्टे का सफल संचालन हो रहा है इसका मुख्य कारण पर्वतीय क्षेत्र में एक–दूसरे के सफल परिणाम को देखकर लोगों ने इसे अपना स्व रोजगार का साधन बनाया है और कलान्तर भी इसमें सफल परिणाम देखने को मिलेंगे।

सामाजिक–आर्थिक विकास में होम स्टे का योगदान

होम स्टे एक ऐसी योजना है जहां आगंतुकों को होम स्टे सुविधाओं के बीच संस्कृति का आदान–प्रदान करने का मौका मिलता है। जनपद में होमस्टे, सांस्कृतिक आदान–प्रदान के साधन से कहीं अधिक स्थानीय लोगों के स्व–रोजगार का साधन भी है। यह उन ग्रामीणों और समुदायों के लिए आय का एक स्रोत भी है जिनके पास रोजगार और आर्थिक विकास के लिए केवल कुछ ही विकल्प हैं। होमस्टे में वृद्धि से इस क्षेत्र में अधिक पर्यटक आ रहे हैं जिसका कारण यहां के पर्वतीय क्षेत्रों में बेहतर जलवायु, नयनाभिराम अलौकिक सुन्दर वादियां, पहाड़ों से गिरते दिखाई देने वाले सुन्दर झरने, रंग–बिरंगे पशु–पक्षी, सत्त जैव–विविधता, पहाड़ी लोगों का आतिथ्य–सत्कार, क्षणिक मौसम परिवर्तन और शुद्ध पीने का जल जैसे प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक कारकों ने यहां हमेशा से पर्यटकों को आकर्षित किया है। पर्यटकों की संख्या में वृद्धि से स्थानीय लोगों के लिए आर्थिक स्रोतों में भी वृद्धि हुई है। होमस्टे के कारण यहां का समुदाय बढ़ तथा विकसित हो रहा है। इस कार्यक्रम से होमस्टे संचालक भी कमाई कर रहे हैं। होमस्टे अपने आप को देश के पर्यटन में सतत् विकास का एक उपयोगी स्रोत बनाता जा रहा है। क्षेत्र विशेष में होमस्टे जैसे योजनाओं से ग्रामीण समुदाय के अधिकांश लोगों को स्वरोजगार करने का मौका मिल रहा है और यहां के लोगों को आजीविका के लिए विदेश नहीं जाना पड़ रहा है। इससे समग्र रूप में ग्रामीण समुदाय विकसित हो रहा है।

आर्थिक परिवर्तन होम स्टे का एक महत्वपूर्ण योगदान है क्योंकि यह पर्यटकों को प्रदान की जाने वाली सेवाओं से कमाई करता है। होम स्टे ने बागेश्वर जनपद के पहाड़ी क्षेत्रों में बेरोजगार लोगों को स्वरोजगार के माध्यम से अपने जीवन स्तर में सुधार करने का अवसर दिया है। इसने शहरी समाज की तुलना में ग्रामीण संस्कृति, प्राकृतिक सौंदर्य, घरेलू वातावरण और सबसे बड़ी बात शांतिपूर्ण वातावरण के माध्यम से पर्यटकों को आकर्षित करके ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा दिया है। होम स्टे में पर्यटकों को स्थानीय खाद्य पदार्थों का असली स्वाद मिल सकता है। इस व्यवस्था में रहकर ऐसा प्रतीत होता है कि इसने नगरीय क्षेत्रों के होटल की कमाई को ग्रामीण समुदाय में स्थानांतरित कर दिया है। जिसका सीधा असर होम स्टे संचालकों के साथ–साथ अन्य समुदाय के लोगों की आर्थिक स्थिति पर भी पड़ा है।

स्थानीय पर्यटन व अर्थव्यवस्था में परिवर्तन होम स्टे योजना का योगदान

सर्वे के दौरान पूछताछ के माध्यम से पता चला है कि होमस्टे से लोगों को अच्छा परिणाम मिल रहे हैं। और लोग इस पर रूचि दिखा रहे हैं। सुदूर पर्यटन के खाती गांव तहसील कपकोट में प्रभावी नतीजे सामने आये हैं। यहां पर कुल 28 परिवार निवासित हैं जिनका रोजगार का साधन पर्यटन है वर्तमान में 28 घरों में से 24 घरों में पर्यटक होमस्टे का निर्माण किया गया है। जिससे इन घरों की रोजी रोटी चलती है। पहले की तुलना में रोजगार के स्तर में सुधार हुआ है।

यहां के लोग यह भी बताते हैं कि पर्यटन विभाग द्वारा इन्हे काफी सहयोग भी किया है, होमस्टे का रजिस्ट्रेशन करने के बाद पर्यटन विभाग बागेश्वर द्वारा इन्हें होमस्टे के मेन्टीनेन्श के लिए यहां के 24 परिवारों को 25–25 हजार रूपये की सहयोग राशि विभाग द्वारा आवंटित की है। जिसका भुगतान भी समय पर ही विभाग द्वारा किया जा चुका है। इस बात से हम अंदाजा लगा सकते हैं कि यहां के पर्यटन विभाग द्वारा पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए समय पर ही लोगों को पर्यटन से सम्बंधित योजनाओं को लोगों तक पहुँचाने तथा उसकों लागू करने में भी प्रमुख भूमिका रही है।

जनपद के होमस्टे धारकों को यह भी मानना है कि क्षेत्र विशेष में अगर नेटवर्क सम्पर्क बेहतर होता तो इसके संचालन में बड़ी सफलता मिलती। क्योंकि संचार सुविधा का इसमें बड़ा रोल होता, समय से पहले टूरिस्ट उस स्थान पर बुकिंग कर लेता जहां वह घुमने जाना चाहता है। जनपद में कहीं–कहीं नेटवर्क सुविधा उपलब्ध होने से सीजन में पर्यटकों को यह सुविधा उपलब्ध हो जाती है। कई ऐसे क्षेत्र हैं जहां अभी तक नेटवर्क सुविधा है ही नहीं। इससे वहां के होमस्टे पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा है। कई जगह तो लाइट की सुविधा भी उपलब्ध नहीं है जिस कारण से इलैक्ट्रोनिक उपकरण चार्ज भी नहीं हो पाते हैं। जिस कारण संचार सुविधा में व्यवधान पड़ने से होमस्टे प्रोग्राम का विस्तार नहीं हो पाया है।

सर्वे के दौरान लोगों के सुझाव यह भी थे कि पर्यटक होमस्टे मे रहने के साथ–साथ आपसी तालमेल बनाने में भी उत्सुक रहते हैं। जनपद के खाती, गोगिना तथा लीती गांव में अभी तक आये पर्यटकों ने इस विषय पर अपनी राय बताई है कि हम इस क्षेत्र के भ्रमण में आते रहेंगे और आपके यहीं ठहरेंगें। इसका मतलब लोगों को होमस्टे सुविधा पसन्द आ रही है। सीजन में सुदूर गांवों में मुहल्ले तथा पड़ोसी के यहां कुमाऊँनी संस्कृति में चली आ रही पहाड़ी जागर, घन्यानी, धौंसी, नौर्त, आठ्यों आदि क्षेत्रीय संस्कृति को भी पसन्द करने लगे हैं। जिसे देखकर पर्यटक आनंदित हो रहे हैं और झोड़ा चांचरी में हिस्सा ले रहे हैं, यह दृश्य उनको और भी अधिक प्रफुल्लित कर देता है। यह एक ग्रामीण पर्यटन की उभरती हुई शुरूआत भी है।

जनपद के सीमांत क्षेत्रों के पर्यटन में होमस्टे की सबसे प्रभावी कारकों में यहां का खान–पान पहाड़ी लोगों का आतिथ्य सत्कार यह पर्यटकों द्वारा बहुत पसन्द किया जाने लगा है। स्थानीय खान–पान में मडुवे की रोटी, घी, लाल चावल का बना भात, लाई की सब्जी, शहद, मट्ठा आदि खाद्य पदार्थ को अतिथि पसन्द करने लगे हैं। जिससे क्षेत्र विशेष में इन चीजों की मांग बढ़ भी रही है। इन चीजों की मांग के कारण आने–वाले समय में पशुपालन तथा कृषि पर भार पड़ने की संभावना भी दिखाई दे रही है क्योंकि बाहर से आने वाले पर्यटक स्थानीय पदार्थों को पसन्द करते हैं। इससे आने वाले समय में पहाड़ी क्षेत्रों पलायन जो दीमक की तरह लग गया है उसको रोकने में काफी सफल परिणाम देखने को मिलेंगे।

कुछ क्षेत्रों में स्थानीय लोगों का यह भी मानना है कि संचार सुविधा बाधित होने से अन्य राज्यों के पर्यटक अपने साथ ही खाने–पीने की सुविधाओं (कैटरिंग) को भी साथ लेकर आते हैं जिससे स्थानीय लोगों की आजीविका पर भी बुरा प्रभाव देखने को मिल रहा है। इसका कारण जनपद के कई ऐसे क्षेत्र हैं जहां पर सरकारी बंगलों, टूरिस्ट रेस्ट हाउस की कमी भी है। सबसे बड़ी बात है कि लोगों को पता नहीं है जिसके कारण स्थानीय समुदाय का रोजगार भी प्रभावित हो रहा है। इस तरह की समस्या तहसील कपकोट के लीती तथा गोगिना के गांव में दिखाई दे रही है।

निष्कर्ष

उत्तराखण्ड के जनपद बागेश्वर, कुमाऊँ हिमालयी क्षेत्र में होम स्टे के पर्यटन पर आधारित अध्ययन का मुख्य उद्देश्य होम स्टे संचालकों और ग्रामीण समुदाय का सामाजिक–आर्थिक विकास का पता लगाना, होम स्टे कार्यक्रम में होम स्टे संचालकों की भागीदारी के पीछे प्रेरक कारकों की खोज करना तथा मौजूदा होम स्टे कार्यक्रम पर स्थानीय समुदाय की धारणा को जानना प्रमुख उद्देश्य था। अध्ययन से पता चलता है कि होम स्टे संचालकों की आय में पहले की तुलना में सुधार हुआ है और आने वाले समय में होम स्टे पर्यटन की बहुत अधिक संभावना दिखाई देती है।

होमस्टे की लोकप्रियता ने सुदूर भारतीय हिमालयी समुदाय के लोगों को नए आर्थिक अवसर प्रदान किए हैं, परन्तु आवास से सम्बंधित कुछ मुद्दों ने इस प्रक्रिया में बाधा डाली हुई है जिनमें योजना से सम्बंधित दिशा निर्देश पालन में असमर्थता, स्वच्छता, बुनियादी ढांचे में अपर्याप्तता, लैंगिक भूमिकायें, जटिल सामाजिक–सांस्कृतिक मुद्दे और आवास का मॉडल आदि शामिल हैं। होम स्टे अवधारणा पर्यटन में सामुदायिक भागीदारी का रूप है जो तेजी से बढ़ रही है इसके अलावा

अध्ययन के दौरान पाया गया है कि इसके सफल होने के लिए होम स्टे पर्यटन योजना संचालकों को शिक्षित और प्रशिक्षित किया जाना चाहिए क्योंकि होम स्टे व्यवसाय और उनकी आय को ठीक से चलाने के लिए ऑपरेटरों की शैक्षिक योग्यता का इस व्यवसाय में महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। इसके अलावा सफल होम स्टे पर्यटन के लिए होम स्टे का विजिटिंग अनुभव भी महत्वपूर्ण है।

क्षेत्र में होम स्टे ने आवासीय सुविधा तथा स्वरोजगार को बेहतर बनाने व विभिन्न सामाजिक वर्जनाओं जैसे जाति आधारित भेदभाव, लिंग आधारित भेदभाव को खत्म करने में मदद की है। होम स्टे प्रारम्भिक विकास के चरण में है तथा इसमें पर्यटन उद्योग को विस्तार एवं वृद्धि करने की पूर्ण संभावना परिलक्षित हो रही है। जनपद में सरकारी नीतियों के कार्यान्वयन के प्रबंधन ने होम स्टे के विकास को कठिन बना दिया है तथा होम स्टे की अधिक संभावना वाले क्षेत्र में परिवहन सुविधाओं की कमी है जिस कारण क्षेत्र में पर्यटकों का आना–जाना कम ही है। होम स्टे के प्रबन्धन पर उचित प्रशिक्षण के अभाव ने संचालकों के लिए होम स्टे को उसकी पूरी क्षमता से प्रबंधन करने में कठिन बना दिया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. Kihima, B. O. and Musila, P. M. (2019). Extent of local community participation in tourism development in conservation areas: a case study of Mwaluganje Conservancy. PARKS Vol. 25.2, p. 47. (http://dx.doi.org/10.2305/IUCN.CH.2019.PARKS-25-2BOK.en)
2. Pradhanang, S.B. (2010). Village: The New Tourist Destination of Nepal. Adroit Publishers, Kathmandu, Nepal, p. 106.
3. Wipada, U. (2007). Criteria Creation for Management Evaluation of Thai Homestay: a case study of Ubonratchathani Province. Thailand: Mahidol University. (Retrieved October 11, 2013, from http://www.books.google.co.ke-creation)
4. Jamil, J. and Hamzah, A. (2007). KPW and Women roles in Banghuris Homestay; Rural Tourism Research in Malaysia. Retrieved May 16, 2013. (http://www.ritsumei.ac.jp/acd/re/k-rsc/hss/book/pdf/vol02-03)
5. Bhan, S. (2014). Homestay Tourism in India: Opportunities and Challenges. African Journal of Hospitality, Tourism and Leisure, Vol. 3 (2), p.6.
6. Wall, G. and Long, V. (1996). Balinese Homestays: An Indigenous Response to Tourism Opportunities. In: Tourism and Indigenous Peoples. Butler, R. and T. Hinch (Eds.). London: International Thomson Business Press, p. 112.
7. Chaiyatorn, S., Kaoses, P. and Thitphat, P. (2010). The developmental model of cultural tourism homestay of the Lao Vieng and Lao song ethnic groups in the central region of Thailand. Journal of Social Sciences, Vol. 6, pp. 130-132.
8. Bhuiyan, M.A.H., Siwar, C., Ismail, S. M. and Islam, R. (2011). The role of homestay for ecotourism development in east coast economic region. Journal of Applied Sciences, Vol. 8 (6), pp. 540-546.
9. Kihima, O. (2015). Community and Tourism Entrepreneurship: Toward Viable Community Based Tourism Initiatives in Kenya. The East African Journal of Hospitality, Leisure and Tourism March: 1821–8393. p. 28.
10. Timilsina, P. (2012). Homestay Tourism Boosts Ghale Gaon's Economy. p.4, Retrieved from http://www.gorkhapatra.org.np./rising.detail.php?
11. सिंह, सु0 एवं परिहार, डी0एस0. (2022). तहसील बागेश्वर में पर्यटन की समस्यायें और सम्भावनायेंः सुदूर संवेदन एवं जी0आई0एस0 के माध्यम से, International Journal of Applied Research, Vol. 8 (3), p. 120. (https://doi.org/10.22271/allresearch.2022.v8.i3e.9589)